

guruVAyupureshastotrAkSharamAlA

——
गुरुवायुपुरेशस्तोत्राक्षरमाला

——
Document Information



Text title : guruVAyupureshastotrAkSharamAlA

File name : guruVAyupureshastotrAkSharamAlA.itx

Category : vishhnu

Location : doc_vishhnu

Author : shrIjnAnAnandasarasvatI virachitam, bhAshAntarakRitaM sushrI prakAsha agravAla
sushrI kalpanA guptA

Transliterated by : PSA Easwaran

Proofread by : PSA Easwaran

Latest update : February 8, 2018

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com


This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

June 29, 2023

sanskritdocuments.org



गुरुवायुपुरेशस्तोत्राक्षरमाला



ॐ श्रीपरमात्मने नमः ।

स्तोत्ररचयिता स्वामी श्रीज्ञानानन्दसरस्वती, अध्यक्ष, संस्कृत विभागः,
शिवानन्दाश्रमः ।

भाषान्तरकर्त्री सुश्री प्रकाश अग्रवाल, सुश्री कल्पना गुप्ता, अेम०अे०)

प्रथमो भागः ।

अन्तः सन्ततमन्तरायरहितं दिव्यर्षिभिर्वीक्षितम् ।

सन्तमार्तिविनाशनैकानिरतं भक्तावने दीक्षितम् ।

भल्यादूरगतं सुरारिनिकरप्रध्वासनं सज्जना-

वल्याधारमनारतं गुरुमरुद्देहाधिनाथं भजे ॥ १ ॥

दिव्य ऋषिर्षो द्वारा (अपने अन्तः करणों में) सर्वदा

व्यवधानरहित भाव से दृष्ट, दुःखी जनों के दुःख-विनाश

में ही रत, भक्तों के कल्याणकत्त, दृष्ट व्यक्तियों के लिये

अगम्य (तथा) असुर-समूह के नाशकर्ता, सज्जनों के आधार-रूप

श्री गुरुवायुपुरेश का मैं सदा भजन करता हूँ ।

आतङ्कापडमङ्घ्रिपङ्कजशुषां भक्तोत्तमानां सता-

मातन्वानममन्दमोदमनिशं ध्यानैकतानात्मनाम् ।

भयोतप्रतिभप्रभाविलसितं वातालयाधीश्वरं

सद्योगिप्रकरान्तरङ्गसरसीहंसं सदा भावये ॥ २ ॥

(निज) चरण-कमलों में प्रीति रखने वाले सख्ये तथा उत्तम

भक्तों के भय को दूर करने वाले, (अपने) ध्यान में नित्य

ऐकाग्र हुँ आत्माओं के लिये उत्तमोत्तम नन्द का प्रसार करने वाले,

सूर्यवत् कान्ति से शोभायमान (तथा) श्रेष्ठ योगिजनों के

अन्तःकरणरूपी सरोवर में हंस (के समान) विवास करने वाले)

श्री गुरुवायुपुराधीश का मैं सदा ध्यान करता हूँ ।

ध्यामुज्जितवदृभिरैडिकसुभेष्वध्यात्ममार्गोन्मुषैः
स्वस्थान्तःकरौर्मडामुनिजनैरालोक्ष्यमानाकृतिम् ।
पिन्नानाभिल्लोकशोकनिकरध्वान्तांशुमन्तं सदा
भिन्नाशेषसुरद्विषं गुरुसमीरागारवासं भजे ॥ ३ ॥

धललौडिक सुभों की धया को त्याग देने वाले अध्यात्ममार्गोन्मुषी
निर्मललृदय मडामुनियों द्वारा दृष्ट स्वरूप वाले, समस्त
लोकों के शोकसमूह-रूपी अन्धकार को नष्ट करने वाले सूर्य
(तथा) निःशेष असुरों का अन्त करने वाले श्री गुरुवायुपुरेश
का मैं सदा भजन करता हूँ ।

धडा नास्ति समस्तवस्तुषु भडिर्दृश्येषु मे मानसे
मोडावेशविधायकानि सकलान्येतानि निस्संशयम् ।
भल्वेकं तव द्रिव्यमङ्गलतनुध्यानामृतं देखिनां
शल्यध्वंसकरं तदेव मरुदागारेण मे दीयताम् ॥ ४ ॥

मेरे मन में समस्त (सांसारिक) पदार्थों तथा बाह्य दृश्यों
के प्रति लालसा नहीं है । निस्सन्देह, ये सभी मोह के प्रवेश
को उत्पन्न करने वाले हैं । द्रिव्य कल्याण का प्रसार करने वाले
तुम्हारे रूप का अेकमात्र ध्यान-रूप अमृत ही प्राणियों के समस्त
कष्टों का निवारक है । हे गुरुवायुपुरेश (श्रीकृष्ण) ! वडी
(निज ध्यानामृत ही माप) मुझे प्रदान करे!

उधत्पूर्णाशशाङ्गुकोमलमुषं गोपाङ्गनामोडनं
दृधत्यन्तमुदावलं प्राणमतां सर्वेष्टसन्दीडनम् ।
भर्वं गर्वमशेषदुष्कृतकृतां नानाविधैश्चेष्टितैः
कुर्वन्तं मरुदालयेशमनिशं भक्त्या समाराधये ॥ ५ ॥

उदित डोते डुअे पूर्णं यन्त्र की भाँति कोमल मुष वाले, गोपिकाओं
को मोडित (तथा) प्राणाम करते डुअे (भक्तजनों) के लृद्यों को
अत्यधिक आनन्दित करने वाले, सबकी धयाओं के पुंजरूप तथा
नाना प्रकार के कार्यों द्वारा दुष्कर्मा व्यक्तियों के समस्त धर्ष
को पूर्ण करने वाले श्री गुरुवायुपुरेश की मैं सदा भक्तिपूर्वक
आराधना करता हूँ ।

ठिढामोदमनारतं गुणवतां पूताशयानां नृणां
गाढार्तिप्रकरापलं मुरडरं वातालयाधीश्वरम् ।
भाउडेन्दुप्रतिमालिकं पदसरोजानम्रपीयूषभुक्
षण्डेऽयं सरसीरुडाक्षमभिलाधारं सदा भावये ॥ ६ ॥

निरन्तर परमानन्द रूप, अर्द्धचन्द्र के समान ललाट वाले,
यरणकमलों में नमित अमृतपायी (देव-समूहों) द्वारा स्तुत,
कमल-नयन, अभिलाधार, मुर-छन्ता श्री गुरुवायुपुरेश
का मैं सदा ध्यान करता हूँ, जो पवित्र विचारों वाले गुणी
व्यक्तियों के घोर दुःख समूह को दूर करते हैं ।

ऋद्धज्योतिःस्फुरितवदनं सर्वगोपीजनानां
शुद्धप्रेमप्रसरविषयं मारुतागारनाथम् ।
भेदप्रातं निजपदजुषां नाशयन्तं नितान्तं
वेदप्रोक्तप्रकृतिविभवं माधवं भावयेऽहम् ॥ ७ ॥

समृद्ध ज्योति से दीप्त मुख वाले, समस्त गोपिकाओं के विशुद्ध
प्रेम के विषय-भूत, निज यरण-प्रेमियों के दुःखों को
सर्वथा नष्ट करने वाले, वेदप्रोक्त प्रकृति वैभव (से
सम्पन्न) श्री गुरुवायुपुरेश (माधव) का मैं ध्यान करता हूँ ।

ऋकान्तिनाशितपथोदगणालवेलं
नाकाधिपादिसुरपालनजगडुकम् ।
भ्यातानिलालयपतिं शरणागतानां
शातावलं मुरडरं शरणं प्रपद्ये ॥ ८ ॥

छन्द्रादि देवों के पालन में जगडुक, शरणागतों को आनन्द प्रदान
करने वाले, मुर-छन्ता, (अपनी) थपल कान्ति से मेघ-समूहों
के गर्व को नष्ट करने वाले, प्रसिद्ध गुरुवायुपुरेश
(श्रीकृष्ण) की मैं शरण में जाता हूँ ।

वृसूनुराजसोदरं विदारितासुरं भिस-
प्रसूननेत्रमभ्युतं श्रितावनैकदीक्षितम् ।
भरांशुभास्वरं सदा सदाशयैर्निषेवितं
पुराणपूरुषं भजे समीरगेलवासिनम् ॥ ९ ॥

देवराज छन्द्रे के भ्राता, असुर-बिनाशक, कमलनयन,

अव्युत्, (अपने) आश्रित जनों की रक्षा में तत्पर, सूर्यवत्
भास्वर तथा पवित्र आत्माओं द्वारा सदा सेवित, पुराणपुरुष
श्रीगुरुवायुपुराधीश का मैं भजन करता हूँ ।

लृउपधारिनुगमोक्षमक्षताभं
याउरुशोभितमनोडरपीतयेलम् ।
भर्यांकृतासुरमदं मरुदालयेश-
मुर्वीसुरार्चितपदं सततं भजेऽडम् ॥ १० ॥

सरीसृप (गिरगिट) -उप-धारी नृग (राजा) को मोक्ष प्रदान
करने वाले, पक्षुण्ण प्रभा-सम्पन्न, मनोडर पीत वस्त्रों
से शोभित सुन्दर अङ्गों वाले (तथा) असुरों के दर्प को क्षय
करने वाले तिन श्रीगुरुवायुपुरेश का मैं सदा भजन करता
हूँ, जिनके चरणों की वन्दना ब्राह्मण जन करते हैं ।

अेकं श्रीगुरुवायुमन्दिरपतिं देवं दयासागरं
श्रीकण्ठाम्बुजसम्भवादिदिविषत्सन्दोडसम्भावितम् ।
भेलालोलुपमङ्गनाभिरभिरामाभीरजाभिर्भृशं
तालाङ्गानुजमाश्रितावनपरं भक्त्या समाराधये ॥ ११ ॥

दया के सागर, ब्रह्मादि देव-समूहों द्वारा विवेचनीय,
सुन्दरी गोपिकाओं के साथ कीडा डेतु अत्यधिक समुत्सुक,
बलभद्रानुज, अपने आश्रित जनों के छित चिन्तन में तत्पर,
अेकमात्र श्री गुरुवायुपुरेश की मैं भक्तिपूर्वक पाराधना करता
हूँ ॥

अैश्वर्यावलमात्तमोदमनिशं धर्माध्वसञ्चारिणं
विश्वक्षेमविधायकं विधिनुतं विश्वार्तिविच्छेदकम् ।
अद्वैतनृणां विदूरमनिवागारेश्वरं शाश्वतं
वद्वैकारधरं बलेर्मदडरं ध्यायामि पीताम्बरम् ॥ १२ ॥

धर्ममार्गानुयायी जनों को सदा आनन्दपूर्वक अैश्वर्य प्रदान
करने वाले, विश्व-क्षेम-विधायक, ब्रह्मा द्वारा नमस्कृत,
संसार के कष्टों को दूर करने वाले, (दीर्घसूत्री मनुष्यों से
दूर रहने वाले), शाश्वत, पीताम्बरधारी, श्रीगुरुवायुपुरेश
का मैं ध्यान करता हूँ, जिन्हीने वामन-रूप धारण कर

भलि के गर्व का अन्त किया ।

ओङ्कारात्मकमात्मभक्तनिकरत्राणैकबद्धव्रतं
पङ्कपेतलृदां सदा सुमनसां सर्वैष्टसन्दायकम् ।
पिद्मान् भक्तियुतान् क्षणेन धनदान् कुर्वाणमार्तोत्करे
मुद्राढीनकृपं मरुत्पुरपतिं पद्मापतिं भावये ॥ १३ ॥

ओङ्काररूप, निज भक्त-समूह के त्राणार्थ व्रतबद्ध (तथा)
निष्पाप लृदय सज्जन व्यक्तियों को समस्त अभीष्ट प्रदान
करने वाले, लक्ष्मीपति, श्री गुरुवायुपुरेश का मैं ध्यान
करता हूँ, जो अपने दरिद्र भक्तों को क्षणमात्र में धनपति
(डुबेर) बना देते हैं तथा आर्तजनों पर असीम कृपा करते
हैं ।

औदासीन्यविहीनसाधकगणेष्यात्माश्रितेष्वनवलं
मोदाधानपरायणं परिणतप्रज्ञैर्मुदा संस्तुतम् ।
भेदापोहनतत्परं निजपदाम्भोजाभिलीनात्मनां
वेदान्तप्रतिपादितोरुविभवं वातालयेशं भजे ॥ १४ ॥

उदासीनता से रक्षित (अर्थात् दत्तचित्त) अपने प्राश्रित साधकगणों
को आनन्द प्रदान करने में कुशल, बुद्धिमान् व्यक्तियों द्वारा
लृदय से संस्तुत, अपने यरला-पद्मों में लीन ज्यों के दुःख
हरण में तत्पर, श्रीगुरुवायुपुरेश का मैं भजन करता
हूँ, जिनका विशाल वैभव वेदों में प्रतिपादित किया गया है ।

अम्भोजसनवासवादिशुभनोवृन्दैः समाराधितं
दम्भोपेतनृणामगोचरमधर्मोऽव्याटनैकव्रतम् ।
भाण्डीकर्तुमनर्थजालमनिशं नानाविधं मामकं
याण्डीशाभिनुतं समीरसदनाधीशं भजे सादरम् ॥ १५ ॥

ब्रह्मा तथा षण्द्रादि देवों द्वारा पूजित, दम्भी मनुष्यों के लिये
अगोचर, अधर्म को उभाड़ डेङ्कुने का ऐकमात्र व्रत धारण
किये लुभे, याण्डीपति (परमेश्वर शिव) द्वारा भी स्तुत, श्री
गुरुवायुपुरेश का मैं अपने नाना प्रकार के (दुःखादि रूपः)
अनर्थ-जाल के विध्वंसार्थ आदरपूर्वक भजन करता हूँ ।

अः कल्याणकरः सतां स भगवान् दूरीकरोतु द्रुतं

साकल्येन मदीयश्चित्तकदनं वातालययाधीश्वरः ।

भ्रान्तोद्भृष्टसटासमन्वितनृसिंहाकारमालम्ब्य यः

स्वान्तोदीर्घारुषा जघान दनुजं प्रह्लादतातं पुरा ॥ १६ ॥

सज्जनों का कल्याण करने वाले वल भगवान् श्रीगुरुवायुपुरेश

मेरे चित्त को कष्ट देने वाले समस्त (तत्त्वों) को शीघ्र दूर

करें, जिन्होंने प्राचीन काल में आकाश तक डूबे केसरो से

युक्त नृसिंहाकार धारण कर, अत्यधिक रोष (-युक्त लृष्टय)

से प्रह्लाद के पिता दैत्य (द्विरण्यकशिपु) का वध किया था ।

कलुषलरणदीक्षं स्वाङ्घ्रिपद्माश्रयाणां

विलुलितकयभाराभीरनारीपरीतम् ।

भलु पवनपुरेशं देवमेकं प्रजोर्वी-

विलुहितसुकुमाराकारमाराधयेऽलम् ॥ १७ ॥

अपने चरणकमलों का आश्रय लेने वाले (मनुष्यों) के पापों को

दूर करने में कुशल, कुञ्चितकेशभार से युक्त गोपिकाओं

से घिरे लुब्धे (तथा) प्रजलूमि में लोटते लुब्धे सुन्दर बालक को

प्रकृति वाले ऐकमात्र देव श्रीगुरुवायुपुरेश की मैं आराधना

करता हूँ ॥

भलदनुजकृतान्तं भक्तवात्सल्यवन्तं

यलदलकललाटं दीनलोडानवन्तम् ।

भमणिसदृशभासं मारुतागारवासं

सुमलितमुनिवृन्दैर्भावितं भावयेऽलम् ॥ १८ ॥

मैं दृष्ट दैत्यों का वध करने वाले, भक्तों के प्रेम से

सम्पन्न, दीन जनों के रक्षक, यञ्चल अलकावलि से शोभित

ललाट वाले, सूर्यवत् भास्वर (तथा) मडामुनिवृन्दों द्वारा

ध्यान किये जाने वाले श्रीगुरुवायुपुरेश की भावना करता हूँ ।

गतदृशितसमूहैः साधुभिर्भक्तिपूर्व

कृतनुतिततिवर्षं वातगेडाधिवासम् ।

भरनभरविदीर्घकूरुद्वैत्याधिराजं

सुरदरलरमीडे नारसिंहस्वरूपम् ॥ १९ ॥

मैं नृसिंहरूप में अपने तीक्ष्ण नभों से कूरु द्वैत्याधिराज

को विदीर्षा कर देवताओं के भय को दूर करने वाले श्री
गुरुवायुपुरेश का स्तवन करता हूँ जिनपर निष्पाप साधुसमूह
भक्तिपूर्वक स्तुतियों को वर्षा करते हैं ।

धनययसमवर्षा भूरिकारुण्यपूर्णा
सनकमुभमुनीन्द्रैः सन्ततं स्तूयमानम् ।
भगपरिवृढकेतुं भक्तकल्याणलेतुं
निगमलसितमीडे मारुतागारनाथम् ॥ २० ॥

मैं मेघसमूह के समान (श्याम) वर्ण वाले, अतिशय
करुणामय, सनकादि महामुनियों द्वारा सदा स्तुत, भक्तों के
कल्याण के लेतुभूत (तथा) वेदों में प्रकाशित, गरुडध्वज
श्री गुरुवायुपुरेश की स्तुति करता हूँ ॥

मेघककलेवरं समनुरक्तगोपीजनैः
समेतमिननान्दिनीपुण्डिनकेलिलोलाशयम् ।
भलीनविलसत्करं विदितभारतायोधने
भिलीकृतश्रिपूत्करं पवनगोडवासं भजे ॥ २१ ॥

मैं मञ्जन के सदृश कृष्णवर्ण शरीर वाले,
अनुरक्त गोपिकाओं के नाथ कालिन्दी-तट पर प्रसन्नतापूर्वक
कीडा करने के छच्छुक, प्रसिद्ध महाभारत युद्ध में
अश्वरास द्वारा सुशोभित करों वाले (तथा) रघु-समूह
के नाशकर्ता श्रीगुरुवायुपुरेश का भजन करता हूँ ।

यञ्चरीकनिकरोपमालकलसन्मनोडरमुभाम्भुजं
यञ्चलातुलितपीतवाससममेयकान्तिपरिवेष्टितम् ।
भञ्जरीटनयनं जनार्दनमनेकभक्तजनतामनः-
कञ्जभानुमानिलालयेश्वरमनारतं मनसि भावये ॥ २२ ॥

मैं भ्रमर समूह के समान अलकावलि से घिरे मनोडर मुभकमल
वाले, विद्युत् की भान्ति (ज्योतिर्मान) पीताम्बरधारी, अपरिमेष
कान्ति से वेष्टित, भञ्जरीट के समान नयनों वाले, नाना
भक्तजनों के मनस्कमल के लिम्बे) सूर्य (सदृश्य) , जनार्दन
श्रीगुरुवायुपुरेश का मन से ध्यान करता हूँ ।

छन्नापेतद्धृदां नृणामविरतं सर्वाभिलाषप्रदं

पद्मावल्लभमप्रमेयविभवं वातालयधीश्वरम् ।

भेदावेशवशंवदावनपरं कारुण्यवाराकरम् ।

पादानम्रजनाशुभोत्तरुदरं शौरिं समाराधये ॥ २३ ॥

मैं निश्चललृट्य मनुष्यों की समस्त धृष्ट्याओं को पूर्ण
करने वाले, लक्ष्मी ञु के पति, अपरिमित दिव्य वैभव से
सम्पन्न, करुणा-सागर, दुःखी जनों की रक्षा में तत्पर,
(तथा) अपने चरणाकमलों में नमन करने वाले मनुष्यों के
अशुभहर्ता श्रीगुरुवायुपुरेश की आराधना करता हूँ ।

जननमरणासिन्धुमग्नमेनं

जनमनिलालयवास दीनदीनम् ।

भलनिकरविदूर पाछि विषणो

जलजविलोचन दीनलोकबन्धो ॥ २४ ॥

दुष्टजनों के समूह से दूर रहने वाले, छे कमलनयन,
दीनबन्धु, श्री गुरुवायुपुरवासी विषणो ! जन्म-मरण के सिन्धु
में निमग्न इस दीनातिदीन मनुष्य) की रक्षा कीजिये ! ।

ऋटिति सकलतापान् नाशयत्वय्युतो मे

स्फुटितमरकताभः श्रीकरः पद्मनाभः ।

भयितविविधरत्नप्रोल्लसत्काञ्चिधारी

प्रयितसुकृतगम्यः श्रीसमीरालयेशः ॥ २५ ॥

स्वच्छ मरकतमणि के समान प्राभा वाले, (भक्तों को)

श्रीप्रदायक, नाना रत्नजटित दीप्तिमान् मेण्भला को धारण करने

वाले, पुण्यकर्मा लोगों के लिये सुगम्य, पद्मनाभ, अय्युत

श्रीगुरुवायुपुरेश मेरे समस्त कष्टों को तत्काल नष्ट करें !

अभञ्जनं सुरद्विषां जगद्गुहां विनाशनं

प्रभञ्जनालयेश्वरं प्रभावशेषभास्वरम् ।

प्लिलीकृतारसञ्चयं स्वपादपङ्कजद्वये ।

निवीनयेतसां सतां शुभावहं विभावये ॥ २६ ॥

मैं अत्यधिक कान्ति से प्रकाशमान्, असुर सेनाओं तथा जगद्गोडी

तत्त्वों के) विनाशकर्ता, शत्रु-समूहों का संडार करने वाले

श्रीगुरुवायुपुरेश का ध्यान करता हूँ, जो अपने चरणा-कमलों

में लीनचित्त-सज्जन व्यक्तियों के शुभ का विधान करते हैं ।

टीकां करोमि भवतो भवतोयराशे-

रेकान्तमध्यपतनेन नितान्ततान्तः ।

भेलाविलोलगुरुवायुपुरे मुरारे

श्रीलास्यकालनिलयाव द्याम्बुधे माम् ॥ २७ ॥

गडन संसार-सागर में गिरने से नितान्त दुःखी तथा अकेला

पडा मैं, गुरुवायुपुर में कीडा-विलास करने वाले,

लक्ष्मी के लास्य तथा केलि के केन्द्र, दयासागर मुरारि आप का

स्तवन करता हूँ । आप मेरी रक्षा करे ! ॥ रक्षा करे ।

ऽमुभसुरनिषेव्यं दृष्टदैतेयकालं

सुमुभमभिलभक्तक्षेमकृत्यैकदीक्षम् ।

भलविपिनकृशानुं शार्ङ्गपाणिं नभस्व-

त्रिलयकृतनिवासं वासुदेवं भजेऽडम् ॥ २८ ॥

मैं शिवादि देवों द्वारा पूज्य, दृष्ट दैत्यों के कालरूप,

गुरुवायुपुरनिवासी, सुन्दर मुभ वाले, शार्ङ्गपाणि श्रीवासुदेव का

भजन करता हूँ । जो ऐकमात्र समस्त भक्तों के कल्याण में ही

तत्पर तथा दृष्ट जनों के वन के लिये दायानल के समान हैं ।

ऽिण्डीरसन्निभमनोऽरमन्डलासं

भाण्डीकृतासुरगणं तरुणार्कभासम् ।

भेयाधिगीतयशसं निजभक्तदासं

ध्यायामि चारुतरमारुतमन्दिरेशम् ॥ २९ ॥

मैं समुद्र के कुन की भाँति मनोहर मुस्कान वाले,

असुर-समूहों के विनाशकर्ता, नवोदित सूर्य के समान भास्वर,

(तथा) अपने भक्तों के दास, अत्यन्त सुन्दर, वायुमन्दिरपति

(श्रीकृष्ण) का ध्यान करता हूँ, जिनका यशोगान देवगण

करते हैं ।

ढौकनं विविधपद्यजलमयमर्पितं तव पदाम्बुजे

नाकनायकमुभामरोत्करकिरीटकोटिमाणिदीपिते ।

भ्यातवातनिलयेश निस्तुलमलोविलासविमलात्मनां

शातदायक जगन्नियामक पयोजनाभ परिपाळि माम् ॥ ३० ॥

हे प्रसिद्ध वायुपुरेश ! विविधपथसमूहमयी यत्नस्तुति,
 छन्द्रादि देवगणों के मुकुट की करोड़ों मणियों से दीप्त तुम्हारे
 चरण-कमलों में अर्पित है । हे अतुलनीय मछान् विलास करने
 वाले, पवित्रात्माओं के आनन्ददाता, जगन्निघन्ता पद्मनाभ ! मेरी
 रक्षा कीजिये !

एषां सर्वगोपालकबालिकानां कंसद्विषं गोपकिशोरवेषम् ।
 प्पित्रार्तिविच्छेदकमञ्जनाभं वन्दे सदा मारुतमन्दिरेशम् ॥ ३१ ॥

मैं समस्त गोपिकाओं के प्रिय, कंस-द्वेषी, द्युम्भीजनों के
 कष्टों को दूर करने वाले, किशोर गोप-रूपधारी, पद्मनाभ
 श्री वायुमन्दिर-पति श्रीकृष्ण) की सदा वन्दना करता हूँ ।

तरुणारुणकोटिभास्वरं करुणावारिधिमार्तपालकम् ।
 भलदानववैरिणं मरुन्निलयेशं हरिमाश्रयेऽनिशम् ॥ ३२ ॥

मैं करोड़ों नवोदित सूर्यों के समान भास्वर,
 करुणासामर, द्युम्भीजनों के पालक तथा दृष्ट दानवों के वैरी,
 श्रीगुरुवायुपुरेश हरि का सदा आश्रय लेता हूँ ।

यं सतां सततमादधानमपदानमैश्वरमनारतं
 शंसतां विततयेतसामभिमतार्थदानकरणो रतम् ।
 भादुकार्भकवदन्वहं पशुपयोषितां सदनसञ्चयात्
 स्वादुभोजयनिकराशिनं शिवमाशुगालयपतिं भजे ॥ ३३ ॥

सज्जनों के सुभ के अजस्र स्रोत, अपनी सर्वोत्कृष्ट कृतियों का
 निरन्तर गुणानुवाद गायन करने वाले विशाल वृद्ध व्यक्तियों
 के अभिमत हल प्रदान करने में सदा तत्पर गुरुवायुपुरेश
 का मैं भजन करता हूँ; जिन्होने क्षुधातुर शिशु का रूप
 धारण कर गोपाङ्गनाभों के घर में प्रवेश कर उनका स्वादिष्ट
 भोजन भ्रया ।

दानवान्तकमन्यभक्तिमन्मानवावनपरं कृपाकरम् ।
 भण्डितारिनिकरं धृतादरं मण्डितानिलनिकेतनं भजे ॥ ३४ ॥

मैं दानवों का अन्त करने वाले, अनन्य भक्ति से (अपनी साधना

करने वाले (भक्तों की) रक्षा में तत्पर, कृपालु (तथा)
शत्रुसमूह के विनाशक श्रीगुरुवायुपुरेश का आदरपूर्वक
भजन करता हूँ ।

धन्यात्मत्वं गुरुभरुदगारावलोकात्रकामं
सन्ध्यासित्वं सकलविषयेष्वामवैराग्ययोगात् ।
भल्वेते मे पवनसदनाधीश लब्धेऽपि माया-
शल्येनाहं दलितहृदयोऽस्म्यन्वहं पालयैनम् ॥ ३५ ॥

श्रीगुरुवायुपुरेश के दर्शन से मैं परम धन्य हो गया हूँ
तथा समस्त (भौतिक) विषयों में वैराग्य हो जाने से (मैंने)
सन्ध्यासित्व को प्राप्त किया हूँ (तथापि) धन सब को प्राप्त कर
लेने पर भी माया-रूपी शल्य से मेरा हृदय विदीर्ण हो रहा
है । हे वायुपुराधीश (श्रीकृष्ण) माप इस मनुष्य की रक्षा
कीजिए !

निनीनश्चित्तोऽस्मि भवत्कथायां मलीमसान्तःकरणोऽपि सोऽहम् ।
ष्विलीकृताशेषरिपो नभस्वत्पुरीश मे द्रेहि नितान्तभक्तिम् ॥ ३६ ॥

अन्तःकरण मलिन होने पर भी मैं आपकी कथाओं में लीनश्चित्त
वाला हूँ । समस्त शत्रुओं का नाश करने वाले हे श्री
गुरुवायुपुरेश ! आप मुझे अपनी अनन्य भक्ति प्रदान करें !

पवनपुरपते पयोधिकन्याधव नलिनेक्ष्ण नन्दगोपसूनो ।
भलजनकुलकाल द्विव्यशोभावलयित पालय मां कृपालयैनम् ॥ ३७ ॥

हे दिव्य तेज से शोभायमान, कृपागार, कमलनयन,
नन्दपुत्र, लक्ष्मीपति, तथा) दृष्टजनों के कालरूप
श्रीगुरुवायुपुरेश ! आप मेरा पालन करें ॥

कृष्णिपरिवृढशायिन् मारुतागारवासिन्
प्रक्षिपतदसुभाजा सर्वकल्याणदायिन् ।
भश्चित्तमक्षिपिराज्यारुकोटीरधारिन् ।
प्रश्चित्तविलवशालिन् यक्षपाणे नमस्ते ॥ ३८ ॥

हे शेषशायी, यक्षपाणि, अपने यरणों में नमन करने
वाले सुपात्रों का समस्त कल्याण करने वाले, मणि-जटित

सुन्दर शोभायमान मुकुटधारी तथा) समस्त वैभव-सम्पन्न
गुरुवायुपुरेश (श्रीकृष्ण) आपको मेरा नमस्कार है ॥

बलसहज उड़े सदा नभस्वन्निलयनिवास नितान्तकान्तमूर्ते ।
भुरदलितधरोत्रकेशीहत्याकर दनुजान्तक पाछि मां कृपालो ॥ ३९ ॥

सदा गुरुवायुपुरवासी, बलभद्र भ्राता, नितान्त सुन्दर प्राकृति
वाले, (गोत्रप धारण कर) अपने भुरों से पृथ्वी को विदीर्ण
करने वाले, उग्रकेशि की हत्या करने वाले (तथा) दानवों के
विनाशकर्ता, कृपालु हरि मेरी रक्षा कर ! ।

भक्त्या भवत्यद्युगस्मरणैकतानो
मुक्त्याशया सकलपाल नयामि कालम् ।
भाण्डेन्दुसन्निभललाटविनम्रभक्त
षण्डेज्य वातपुरनायक पालयैनम् ॥ ४० ॥

हे श्रीगुरुवायुपुराधीश ! मैं मुक्ति की इच्छा से भक्तिपूर्वक
आपके चरण-युगलों का अेकाग्र स्मरण करता हुआ (अपना) समय
व्यतीत करता हूँ । हे अर्द्धयन्त्र के समान ललाट वाले,
विनम्र भक्त-समूहों द्वारा स्तुत, सर्वपालक देव ! (आप)
मेरा पालन करें !

मलितमुनिजनेन्द्रपूतयेतोविलितनिवास मरुत्पुरेश शौरै ।
भलु तव करुणाकटाक्षवर्षं कलुषहरं मयि तत्पतत्वजस्रम् ॥ ४१ ॥

मलामुनिजनों के पवित्र चित्त में निवास करने वाले हे श्री
गुरुवायुपुरेश ! तुम्हारे कृपाकटाक्ष की वर्षा निश्चय ही
समस्त पापों को दूर करती है । वल (कृपाकटाक्ष) मेरे ऊपर
निरन्तर वर्षित हो !

यमनियमपरैरनन्यचितैर्यमिनिवडेरभिगम्यदिव्यमूर्ते ।
भमणिशतसमाभ दृष्टलोकप्रमथन मामव मारुतालयेश ॥ ४२ ॥

यम-नियमपूर्वक अनन्य भक्ति से (साधना करने वाले)
मुनीन्द्रों द्वारा प्राप्य, शत सूर्यों के समान प्राभावाले,
दृष्टजन्विनाशक, दिव्यमूर्ति श्रीगुरुवायुपुरेश मेरी रक्षा
करें !

रणनिहतसमस्तदेवविद्धिऽगाण पवनालयवास विश्वमूर्ते ।
अथरविनुत भक्तगीतनानासुशरित केशव सादरं नमस्ते ॥ ४३ ॥

युद्ध-रत समस्त देव-शत्रुओं को नष्ट करने वाले,
देवस्तुत, विश्वमूर्ति, श्रीगुरुवायुपुरवासी केशव को मेरा सादर
नमस्कार है, जिनके नाना सुकर्मा का भक्तगण गान करते हैं ।

लक्ष्मीकृतामृतपथं यतमानमेनं पक्षीन्द्रवालन भवत्पदलीनचित्तम् ।
भेदाभ्युराशिपरिमग्नमवार्तबन्धो वेदान्तवेद्य गुरुमारुतगोडवासिन् ॥ ४४ ॥

वेदान्तों द्वारा ज्ञातव्य, गरुडवाही, आर्तबन्धु, हे
गुरुवायुपुरवासी (श्री कृष्ण) ! आप दुःखसागर में निमग्न,
भोक्ष को लक्ष्यकर प्रयत्नशील, अपने थरणों में लीनचित्त
ठस (मनुष्य) की रक्षा कीजिए !

वंशीलसत्तरमपारकृपाभ्युराशिमाशीविषेन्द्रशयनं मरुदालयेशम् ।
भेलापरं पशुपबालगणैः साकं नीलाम्बरानुजमलं शरणां प्रपद्ये ॥ ४५ ॥

मैं वंशी से विभूषित करों वाले, अपार कृपासागर,
गोप-बालकों के साथ कीडा करने वाले, बलभद्रानुज
शेषशायी श्रीगुरुवायुपुराधीश की शरणा में जाता हूँ ॥

शतमभमुभलेपैः सन्ततं सेव्यमानं
नतमनुजसदस्रैः स्तूयमानापदानम् ।
भलनिकरविदूरं द्रिव्ययोगीश्वराणां
सुलभमनिशमीडे मारुतागारवासम् ॥ ४६ ॥

मैं छन्द्रादि देवों द्वारा सतत सेवित, (थरणों में) नत सदस्रों
मनुष्यों द्वारा स्तुत, दुष्टों के समूह से दूर (रहने वाले,
तथा) द्रिव्य योगीश्वरों को सुलभ श्रीगुरुवायुपुरेश की सदा
स्तुति करता हूँ ।

षट्कर्मभिः स्तोत्रगणैर्निकामं सत्कर्मभिश्चानिशमीज्यमानम् ।
प्यातात्मवीर्यं शमिताशिशौर्यं वातालयेशं सततं भजेऽडम् ॥ ४७ ॥

मैं सत्कर्मा मनुष्यों द्वारा स्तोत्रसमूहों से स्तुत तथा षट्
(वैदिक) कर्मों द्वारा पूजित, शत्रु के पराक्रम का दमन करने
वाले, प्रसिद्ध आत्मबली, श्री गुरुवायुपुरेश का सदा भजन

करता हूँ ॥

सदा सदासेव्यपदं सुराणां मुदावहं पत्ररथेन्द्रवाहम् ।
भलातिदूरं परिधीप्रतेजोविलासमीडे मरुदावयेशम् ॥ ४८ ॥

मैं सज्जनों द्वारा सदा पूजित थरणों वाले, देवों के आनन्ददाता,
दृष्ट जनों से दूर रहने वाले), प्रदीप्त तेज से शोभायमान,
गरुडवाही श्रीगुरुवायुपुरेश की स्तुति करता हूँ ॥

उरनुतगुणराशे गोपिकावृन्दवासो-
उर सुरदरुडारिन् दृष्टसंडारकारिन् ।
भरकरसमदीप्ते मारुतागारवासिन्
परमपुरुष विष्णो पाडि मां पद्मपाणे ॥ ४९ ॥

उे शङ्कर द्वारा स्तुत गुणों वाले, गोपिकावृन्द
के वस्त्राण्डता, देवों के भय को दूर करने वाले,
दृष्ट-संडारी, सूर्यवत् भास्वर, पद्मपाणि गुरुवायुपुरवासी,
पुराण-पुरुष विष्णु ! (आप) मेरी रक्षा कीजिये !

लान्तकस्वनसमेतगोपशिशुर्गुप केशव सुरद्विषा-
मन्तक प्रथितदिव्यवैभव भवाब्धितारक जगत्प्रभो ।
भेलनोत्सुक कलिन्धजापुलिनकाननावलिषु गोपिका-
भालिकाभिरभिरामर्गुप मरुदावयेश परिपाडि माम् ॥ ५० ॥

मधुरस्वरयुक्त गोपशिशु (गुपधारी), असुरविनाशक, विशाल
दिव्य वैभव-सम्पन्न, संसार-सागर को पार कराने वाले,
कालिन्दीतट के वनों में गोपिकाओं के साथ कीडा लेतु समुत्सुक,
संसार के स्वामी, सुन्दर गुप वाले उे श्रीगुरुवायुपुराधीश,
मेरी रक्षा कीजिये ! ।

क्षीणांऽप्रकटैर्नरैरविरतं सन्दृश्यमानं जगत्-
प्राणागारपतिं निजाश्रितनृणां संसारतापापहम् ।
पिद्धान् भक्तजनान् कुबेरसदृशान् कुर्वन्तमार्तोत्करे
भद्राधानपरायणं कृतिनुतं कृष्णं समाराधये ॥ ५१ ॥

क्षीण पापों वाले मनुष्यों द्वारा सदा दृष्ट, अपने आश्रित जनों
के सांसारिक कष्टों को दूर करने वाले, दृष्टिभक्तजनों को

कुंभेर सदृश बनाने वाले, आर्तजनों के कल्याण में तत्पर,
सुकृती व्यक्तियों द्वारा स्तुत्य, वायुपुराधीश श्रीकृष्ण की
मैं आराधना करता हूँ ।

एति प्रथमो भागः ।

अथ द्वितीयो भागः ।

अस्तोककान्तिपारिवेषलसन्मुभाञ्जं
उस्तोढसारसविशिष्टगदारिशङ्खम् ।
ध्वस्तोद्धतासुरभलं मरुदालयेशं
शस्तोरुवैभवमजस्रमुपाश्रयेऽहम् ॥ १ ॥

जिनका मुभ-कमल प्रभा-माण्डल से अत्यधिक कान्तिवान् है,
जो ढाँधों में शङ्ख, यज्ञ, गदा और पद्म लिम्बे लुम्बे हैं;
जिनकोने उद्धत (उद्दण्ड) असुरों के समूह को विनष्ट किया है
और जो प्रभुत अश्रयवान् । हैं - जैसे भगवान् विष्णु का
मैं निरन्तर आश्रय लूँ ॥

आलोकनीयनवनीरदनीलकायं
भूलोकवासिजनसञ्चयपुण्यमूर्तिम् ।
सालोक्यदं सुकृतिनां पवनालयेशं
त्रैलोक्यनायकमहं शरणं प्रपद्ये ॥ २ ॥

जिनका शरीर रमणीय नव-नीरद के समान श्यामल वर्ण का
है, जो सांसारिक जिवों के पुण्यों के सञ्चित विग्रह के समान
हैं, जो पुण्यात्माओं को अपना लोक प्रदान करते हैं तथा जो
तीनों लोकों के अधीश्वर हैं - जैसे भगवान् श्रीकृष्ण की
मैं शरण जाता हूँ ।

एनशतसमभासं वातगोडाधिवासं
मनसि मुनिवरेण्यैः सर्वदा दृश्यमानम् ।
अनवरतमनेकैर्मानुषैः सेव्यमानं
कनकरुचिरवस्त्रं कृष्णामाराधयामि ॥ ३ ॥

जिनकी कान्ति शत-सूर्यों के समान है, जो तत्त्वद्रष्टा मुनियों
के द्वारा निरन्तर अपने मन से साक्षात् देखे जाते हैं, जिनकी

असङ्ख्य प्राणियों द्वारा निरन्तर सेवा की जा रही है तथा जिन्होत्रे
स्वर्ण-दीप्त वस्त्र धारण किये हैं - जैसे भगवान् श्रीकृष्ण
की मैं आराधना करता हूँ ।

ईशादिसर्वदिविषद्गणामाननीयं
नाशाद्येतमलिशायिनमप्रमेयम् ।
क्लेशापहं प्रणमतां पवनालये-
माशाविहीनजनमानसवासमीडे ॥ ४ ॥

भगवान् शङ्कर आदि सभी देवताओं के पूज्य, अविनाशी,
अगम्य, शेष नाग पर शयन करने वाले, भक्तों के दुःखों
को दूर करने वाले तथा सांसारिक विषय-भोगों की आशा से मुक्त
पुरुषों के लृध्य में वास करने वाले भगवान् श्रीकृष्ण की
मैं आराधना करता हूँ ।

उपगतमनुजानां स्वाङ्घ्रिपद्माश्रयाणा-
मपगतकलुषाणामिष्टदानैकीक्षम् ।
उपयितरुचिदीपं मारुतागारवासं
कृपणजनशरण्यं कृष्णमेवाश्रयेऽहम् ॥ ५ ॥

अपने शरण-कमलों का आश्रय देने वाले, शरणागत एवं
पाप मुक्त मनुष्यों को इच्छित फल प्रदान करने वाले, परम
कान्ति सम्पन्न, अशरण के शरण भगवान् श्रीकृष्ण की मैं
शरण जाता हूँ ।

उद्वानुकम्पमभयप्रदमाश्रितानां
गाढार्तिनाशनपरं पवनालये-
रुढावलेपमलिनीकृतमानसानां
मूढात्मनामतिविदूरगतं भजेऽहम् ॥ ६ ॥

भक्तों पर अनुकम्पा करने वाले, अपने आश्रितों को अभय देने
तथा उनके दारुण दुःख दूर करने वाले, मिथ्याभिमान से मलिन
चित्त वाले मूढबुद्धि पुरुषों से अति दूर स्थित श्रीकृष्ण
भगवान् को मैं प्राप्त करूँ !

ऋदानुभावावयुतमैलिकवस्तुपाली-
बद्धात्मनामविषमं सुकृतैकगम्यम् ।

शुद्धान्तरङ्गमुनिमानसराजडंस-

भिद्धादरं मरुद्गारपतिं भजेऽडम् ॥ ७ ॥

ऋद्धि आदि प्रभाव से युक्त, लौकिक वस्तुओं में आबद्ध
अज्ञानी व्यक्तियों द्वारा अज्ञेय, पुण्यात्माओं के द्वारा सुबोध,
निर्मल अन्तःकरण वाले मुनियों के मन-रूपी मानसरोवर के लिखे
राजडंस, पूज्य पवनालयेश की मैं आराधना करता हूँ ।

ऋनाशनैकनिपुणं कृतदुष्कृतानां

कीनाशमप्रतिमनैकविधापदानम् ।

दीनावनैकनिरतं मरुदालयेशम् ।

मानातिरिक्तमडसं समुपाश्रयेऽडम् ॥ ८ ॥

पापियों, दुष्कर्मियों तथा राक्षसों का विनाश करने में
कुशल, दीनों की रक्षा में तत्पर अतुलनीय तेज वाले तथा
नानाविध अनुपम दिव्य कृतियों वाले श्रीकृष्ण भगवान् की
मैं शरण प्राप्त करूँ ॥

वृभारभूतदानवान् विनाशयन्तमन्वडं

प्रभाविशेषरूपैर्विराजमानविग्रहम् ।

शुभावलावलोकनं मरुत्पुरीनिकेतनं

प्रभावपूषेद्वैतं भजे हरिं सदैव तम् ॥ ९ ॥

सदैव पृथ्वी के भार-स्वरूप राक्षसों का विनाश करने
वाले, प्रभामण्डल विशेष के वर्तुल से सुशोभित शरीर
वाले, कल्याणकारी दन वाले, मरुतागार में निवास करने वाले
प्रभाव-युक्त श्रीकृष्ण को मैं सदैव आराधना करता हूँ ।

वृरूपधृङ्गनृपाय कृपातिरेकात्

सारूप्यदं गुरुसमीरपुराधिवामम् ।

याउत्तमाङ्गविलसच्छिभिपिञ्छजाल-

मारुढभक्तिविनयः स्वयमाश्रयेऽडम् ॥ १० ॥

ध्यायिक्य से गिरगिट रूपधारी राजा नृग को सारूप्यमुक्ति देने
वाले, सुन्दर सिर पर सुशोभित मयूरपङ्ख समूह वाले,
पवनागार में निवास करने वाले, भक्ति एवं विनम्रता से युक्त
मैं स्वयं उनका आश्रय लेता हूँ ।

ऐकमेव मरुदालयाधिपं शोकनाशनपरायणं सताम् ।
सूकराकृतिधरं द्विवौकसां श्रीकरं नरकनाशनं भजे ॥ ११ ॥

पवनागार के ऐकमात्र स्वामी, सज्जनों के दुःख दूर करने में
सर्वथा लीन, सूकर का रूप धारण करने वाले, देवताओं को
समृद्धि प्रदान करने वाले, नरकासुर का नाश करने वाले
भगवान् श्रीकृष्ण की मैं आराधना करता हूँ ।

अैद्यम्यर्यं निगमवयसां निस्तुलानन्दसान्द्रं
भेदध्वान्तप्रकरमिडिरं मारुतागारवासम् ।
वेदप्रोक्तप्रथितमडिमाभोनिधिं गोपिकानां
मोदप्रोज्ज्वलमाकृतमलं कृष्णमाराधयामि ॥ १२ ॥

वेद-शास्त्र-वचनों के मूल विषय, अतुलनीय आनन्द से धनीभूत,
दुःखान्धकार समूह के विभे सूर्य, वेद-कथित विस्तृत
गौरव के समुद्र, गोपियों के आनन्द वृद्धि कर्ता पवनागारवासी
श्रीकृष्ण की मैं उपासना करता हूँ ।

ओङ्काररूपमतिसान्द्रकलायपाली
सङ्काशवर्णमभियूर्णितदृष्टलोकम् ।
पङ्कापलं मरुदगारपतिं जनानाम् ।
तङ्कापनोदनपरं परमाश्रयेऽलम् ॥ १३ ॥

ओङ्कार रूप, अत्यधिक घने कलाय पुष्प समूह-सदृश वर्ण
(रङ्ग) वाले, अधम (दृष्ट) समूह को नष्ट करने वाले,
भक्तों के पाप (कलुष) अ एवं कष्टों के अपहरण में तत्पर
पवनालयेश का मैं आश्रय लेता हूँ ।

औपम्यहीनगुणमप्रतिभप्रभावं
कापट्यहीनमनसामवलोकनीयम् ।
श्रीपद्मनाभमजनिं पवनालयेश-
मापन्नलोकपरिपालकमाश्रयेऽलम् ॥ १४ ॥

अनुपम गुण वाले, अतुल्य प्रभाव वाले, निष्कपट मन वालों
के द्वारा दर्शनीय, अजन्मा, पीड़ितों की रक्षा करने वाले,
पद्मनाभ, पवनगुह के स्वामी श्रीकृष्ण का मैं आश्रय

लेता हूँ ।

अम्भोजलोचनमवर्णगुणापदानं
 दम्भोलिपाणिमुष्निर्जरसेव्यमानम् ।
 शम्भोरपि प्रियकरं मरुदालयेशं
 तं भोगभोक्षदमजस्रमुपाश्रयेऽहम् ॥ १५ ॥

कमल नेत्र, अवर्णनीय गुण-समूह वाले, छन्द्रादि प्रमुष्ण
 देवताओं से सेवित, शिव का भी प्रिय करने वाले, भोग अर्थात्
 भोक्ष प्रदान करने वाले पवनागार के स्वामी का मैं आश्रय लेता
 हूँ ।

अः पातु मारुतनिकेतननाथको मा-
 मापादमस्तकमनोहरदिव्यरूपः ।
 व्यापादितासुरगणः स निजाङ्घ्रिभाजा-
 मापादिताम्बिलसुभः सुतरामुपेन्द्रः ॥ १६ ॥

नभ-शिभ पर्यन्त सुन्दर एवं अलौकिक रूपवाले, असुर समूह
 को नष्ट करने वाले, अपने चरणों की सेवा करने वालों के लिये
 सम्पूर्णा सुभों को प्रदान करने वाले उपेन्द्र मेरी अत्यधिक रक्षा
 करें ।

करसरसिजराजत्तम्भुयकासिपद्मं
 नरकदनुजकालं सर्वलोकैकपालम् ।
 दरुदरममराणां मारुतागारवासं
 मुरमथनमजस्रं भावये भावनीयम् ॥ १७ ॥

नरकासुर के लिये यम-रूप, अभिल विश्व के एकमात्र रक्षक,
 देवताओं के भयनाशक, मुर नामक राक्षस के नाशकर्ता
 तथा ध्यान करने योग्य श्रीगुरुवायुपुरेश का मैं ध्यान करता
 हूँ, जिनके कर-कमल शङ्ख, चक्र, भङ्ग तथा पद्म
 से सुशोभित हैं ।

भगाधिराजवालनं व्रजाङ्गनाविमोहनं
 प्रगाढभक्तिशालिनामभीष्टकार्यदोहनम् ।
 अगाधशेषुषीशुषाऽप्यचिन्तनीयवैभवं
 मृगाङ्कुकोमलाननं भजे मरुत्पुरेश्वरम् ॥ १८ ॥

गरुडवाडी, गोपाङ्गनाओं को प्रलोभित करने वाले, परम
भक्तिसंयुत मानवों के अभीष्ट कार्य के पूर्ण कर्ता तथा
प्रकाण्ड विद्वानों के द्वारा भी अचिन्तनीय समृद्धि से सम्पन्न
उन श्रीगुरुवायुपुरेश की मैं आराधना करता हूँ, जिनका मुझ
चन्द्रमा के समान रमणीय है ।

गतविषयतृषां हृदयवासां विततमनोहरपिञ्छशोभिशीर्षम् ।
सततमसुमतां विभावनीयं कृतगुरुवायुपुराधिवासमीडे ॥ १८ ॥

विषय-तृषणा रहित मनुष्यों के हृदय-कमलवासी,
विस्तृत मोरपङ्ख से सुशोभित शिर वाले तथा साधुभावी
मनुष्यों द्वारा सदा चिन्तनीय गुरुवायुपुरवासी श्रीकृष्ण की
मैं स्तुति करता हूँ ॥

धनतरमुदमात्मभक्तिभाजां मनसि सदा जनयन्तमन्तलीनम् ।
विनतजनपरीतमाश्रयेऽहं विनयपुरस्सरमाशुगालयेशम् ॥ २० ॥

निज भक्तों के हृदय में सदा अमित आनन्द के जनक, तथा
अविनाशी, विनीत जनों से सदा परिवृत श्रीगुरुवायुपुरेश का
मैं विनम्रतापूर्वक प्रश्रय लेता हूँ ।

ऽश्यामकोमलकलेवरमञ्जनाभं
पश्यामि दिव्यमहसं पुरतः कदाऽहम् ।
वश्यात्मवासरसिकं विमलाशयानां
दृश्याकृतिं गुरुसमीरपुराधिवासम् ॥ २१ ॥

कज्जल के सदृश रमणीय श्यामल शरीर वाले तथा आत्मसंयमी
लोगों के हृदय में निवास करने में प्रसन्नता अनुभव करने
वाले उन श्री गुरुवायुपुरेश को कब मैं अपने सम्मुख देखेङ्गा,
जो निर्मल हृदय व्यक्तियों को दृष्ट है तथा जिनकी कान्ति
दिव्य है ।

चरणयुगलनम्रान् सर्वदा पावनान्तः-
करणयुतमनुष्यान् पालयन्तं नितान्तम् ।
निरयपतितसाधूनुद्धरन्तं भजेऽहं
सुररिपुशमनं तं मारुतागारनाथम् ॥ २२ ॥

निज थरएयुगल में सतत विनत पवित्र अन्तःकरण वाले
व्यक्तियों के सर्व प्रकार से परिपालक, नरक में पतित
सज्जनों के उद्धारक तथा देव-शत्रु असुरों के संडारक
श्रीगुरुवायुपुरेश की मैं माराधना करता हूँ ।

छलपशुपकुमारं सर्ववेदान्तसारं
भलनिकरविदूरं सज्जनाम्भोजसूरम् ।
भलरिपुसलज्जतं नाशिताज्ञानज्जतं
जलजनयनभीडे वातगेडाधिवासम् ॥ २३ ॥

कमल-नेत्र तथा श्रीगुरुवायुपुरनिवासी श्रीकृष्ण की मैं
स्तुति करता हूँ, जो ग्वाल-बाल का छत्रवेश धारण करने
वाले, सम्पूर्ण वेदान्त के तत्त्व, दृष्टों को अप्राप्य, सज्जनरूपी
कमलों के लिम्बे सूर्य के समान, छन्द्रे के सडोदर भ्राता तथा
अज्ञान समूह के विनाशक हैं ।

जनिमरणविडीनं स्तुत्यनानापदानं
जनिमदवनलोलं पीतकौशेयथेलम् ।
अनिशमशरणानामाश्रयं भावयेडडम् ।
मुनिदृढयनिवासं श्रीसमीरालयेशम् ॥ २४ ॥

जन्म-मृत्यु से रडित, प्रशंसनीय अनेक कार्यों को करने
वाले, प्राणियों की रक्षा को उत्सुक, पीताम्बरधारी, असडार्यों के
आश्रय तथा मुनि-मानस में निवास करने वाले श्रीगुरुवायुपुरेश
का मैं ध्यान करता हूँ ।

जलवडितनूपुरं सुजनकीर्तितानेकसद-
गुणप्रकरसागरं प्रकटकान्तिदीप्राननम् ।
प्रणमजनरक्षकं समनुरक्तगोपाङ्गना-
गणप्रमदकारणं मरुदगारवासं भजे ॥ २५ ॥

जिनके थरणों में नूपुर ञडूत डो रहे हैं, जो सज्जनों
द्वारा प्रशंसित अनेकों गुणों के सागर हैं, जिनका मुभ अमित
प्राभा से देदीप्यमान है, जो प्रणत जनों की रक्षा करते
हैं तथा जो प्रेमी गोपिकाओं के आनन्द के डेतुभूत हैं - अैसे

गुरुवायुपुरेश की मैं आराधना करता हूँ ।

अभञ्जनं दानवसैनिकानां प्रभञ्जनागारविराजमानम् ।
स्वभक्तलोकान्जागृकविभङ्गदृष्टप्रकरं भजेऽहम् ॥ २६ ॥

असुर सेना के विनाशक, निज भक्तों की रक्षा में सदा जागृक,
दुष्टों के संहार करने वाले तथा वायुगुह में विराजमान
(श्रीकृष्ण) की मैं आराधना करता हूँ ।

टीके समीरपुरनायकमात्मभक्त-
लोकेशदाननिरतं निरघाभिगम्यम् ।
नाकेशमुष्यसुरवन्दितपादपद्म-
राकेन्दुसुन्दरमुभं वसुदेवसूनुम् ॥ २७ ॥

अपने भक्तों को अभीष्ट फल प्रदान में तत्पर, निष्पाप
व्यक्तियों द्वारा सुगम्य, छन्द्रादि प्रमुभ देवताओं से आराधित
यरल-कमल वाले, पूर्णचन्द्र सम सुन्दर मुभ वाले
गुरुवायुपुरेश श्रीकृष्ण की मैं स्तुति करता हूँ ।

ठमाननीयविग्रहं कृतामरादिनिग्रहं
समानतेष्टदायकं समीरगोडनायकम् ।
सुमानवाभिनन्दितं सुराधिराजवन्दितं
स्वमानसेऽभिविद्ये समस्तकार्यसिद्धये । ॥ २८ ॥

शिव द्वारा भी पूज्य विग्रह वाले, देवशत्रु असुरों का
धमन करने वाले, भक्तों को अभिमत फल प्रदान करने
वाले, सज्जनों द्वारा अभिनन्दित तथा छन्द्र द्वारा भी पूजित
श्रीगुरुवायुपुरेश का मैं अपने सम्पूर्ण कार्यों की सिद्धि के लिये
अपने मन में अभिवादन करता हूँ ।

गामरासुरविनाशनं मलःस्तोमदीप्रममराभिसेवितम् ।
कोमलाननलसत्स्मितं मरुद्धामनायकमजस्रमाश्रये ॥ २९ ॥

जो भयङ्कर असुरों के विनाशक हैं, जो अतिशय कान्ति से
देदीप्यमान हैं, देवताओं द्वारा सेव्य हैं तथा जिनका मृदुल
मुभ मन्स्मित से सुशोभित है - उन श्रीगुरुवायुपुरेश का
मैं निरन्तर आश्रय लेता हूँ ।

ढौकिताभिलजनाभयप्रदं नाडिपालकमुपेन्द्रमाश्रये ।
लौकिकेऽसितविडीनमानवालोडितं मरुदगारनायकम् ॥ 30 ॥

अपने सभी शरणागतों को अभय प्रदान करने वाले, देवताओं के
रक्षक, लौकिक कामना-रहित मनुष्यों के दर्शन के विषय
श्रीगुरुवायुपुरेश का मैं आश्रय लेता हूँ ।

एवं गोपिकानां मडितर्षियेतोरङ्गोपविष्टं पवनालयेशम् ।
गङ्गोदयस्थानविशिष्टपादं शङ्खगोपमाङ्गालमुपाश्रयेऽऽडम् ॥ 31 ॥

गोपियों को सुख देने वाले, मडर्षियों के मन-रुपी रङ्गमञ्च
पर विराजमान तथा भ्रमर के समान अङ्ग की डान्ति वाले
श्रीगुरुवायुपुरेश का मैं आश्रय लेता हूँ, जिनका अनुपम
थरण, गङ्गा का उद्गमस्थल है ।

तमालनीलं तरुणारुणालं क्षमागुणाम्भोनिधिमञ्जनाभम् ।
प्रभाथिनं दृष्टजन्तोत्तराणां समाश्रये मारुतमन्दिरेशम् ॥ 32 ॥

जिनका वर्ण तमाल के समान नील है, जिनकी डान्ति नवोदित
सूर्य के सदृश है, जो क्षमादि गुणों के सागर तथा दृष्टों
के विनाशकर्ता हैं, उन श्री गुरुवायुपुरेश का मैं आश्रय
लेता हूँ, जिनके शरीर की प्राणा कञ्जन के सदृश है ।

थमादधानं वरपण्डितानां सुमानवानां थरणानतानाम् ।
समाडितान्तःकरणैर्निरीक्ष्यं नमामि देवं मरुदालयेशम् ॥ 33 ॥

श्रेष्ठ विद्वानों, सज्जनों तथा निज थरणों में अवनत
व्यक्तियों को रक्षा करने वाले तथा प्रशान्त अन्तःकरण से
दृष्ट श्रीगुरुवायुपुरेश को मैं नमस्कार करता हूँ ।

दनुजान्वयनाशनं सदा सन्मनुजानामपवर्गदानदीक्षम् ।
विनुतं कविभिर्मरुत्युरेशं तनुमन्मानवपुण्यमाश्रयेऽऽडम् ॥ 34 ॥

असुर वंश का विनाश करने वाले, सज्जनों को मोक्ष प्रदान
करने को सदा समुत्सुक, कवियों द्वारा प्रशंसित तथा मनुष्यों
के मूर्तिमान् पुण्य-रूप गुरुवायुपुरेश श्रीकृष्ण का मैं आश्रय
लेता हूँ ।

धाराधरोपमरुथिं रुथिराङ्गलासं

श्रीराजमानवदनं मरुदालयेशम् ।
घोरासुरान्तकमपारकृपापयोधिं
नारायणं नरसभं शरणां प्रपद्ये ॥ ३५ ॥

नवनीरद के समान श्यामकान्ति वाले, मनोहर अङ्ग से दीप्तिमान्,
सौन्दर्य से सुशोभित मुग्ध वाले तथा असुरों के लिखे यम-रूप,
अर्जुन के सभा नारायण (श्रीगुरुवायुपुरेश) की मैं शरणा
प्राप्त करता हूँ, जो कृपा के असीम सागर हैं ।

नतजनपरितापं सर्वमुन्मूलयन्तं
शतमभ्यमुभलेभान् सर्वदा पालयन्तम् ।
कृतयमनियमानां योगिनामीक्षणीयं
विततरुचिविदीप्रं नौमि वातालयेशम् ॥ ३६ ॥

जो विनत भक्तों के सम्मूर्ण दुःखों का उन्मूलन करते हैं तथा
छन्द्रादि प्रमुग्ध देवताओं की सदा रक्षा करते हैं, यम-नियम
का पालन करने वाले योगियों को सदा दृष्ट तथा व्यापक तेज
से देदीप्यमान हैं - ऐसे गुरुवायुपुरेश को मैं नमस्कार करता
हूँ ।

पवनपुरनिवासं वासुदेवं कवीनां
कवनविषयभूतं भूतजालैकपालम् ।
अवनविधिसमर्थं स्वाङ्घ्रिभाञ्ज यशोदा-
भवनविहितवीलं बालकृष्णं भजेऽहम् ॥ ३७ ॥

कवियों के काव्य के विषयभूत, प्राणीमात्र के अेकमेव पालक,
निज यरणागतों की रक्षा करने में समर्थ, यशोदा-गुह
में क्रीडा करने वाले, पवनालयेश बालकृष्ण की मैं
आराधना करता हूँ ।

कृशिशायिनमाशुगालयेशं घृष्टिराजमलनीयदिव्यरूपम् ।
प्रक्षिधानपरायणाभिदृश्यं प्रक्षिपत्यानिशमाश्रये मुकुन्दम् ॥ ३८ ॥

शेषनाग पर शयन करने वाले, तेज से देदीप्यमान, मडान्
अलौकिक स्वरूप वाले पवनालयेश मुकुन्द को मैं नमस्कार करता
हूँ तथा उनका आश्रय लेता हूँ, जो अेकाग्रचित्त वाले व्यक्तियों
को पुष्ट हैं ।

भलदेवसडोदरं मुरारिं भललोडैरनिरीक्ष्यमक्षताभम् ।
छलगोपशिशुं मरुत्पुरेशं जलजक्षं सततं समाश्रयेऽहम् ॥ ३९ ॥

भलराम के अनुज, दुष्ट मनुष्यों को अदृष्ट, अक्षीण
कान्तिवाले, कपटी गोप बालक का रूप धारण करने
वाले तथा कमल से नेत्र वाले मरुत्पुरेश (मुरारि)
का मैं निरन्तर आश्रय लेता हूँ ।

भुवनैकनियामकं व्रजस्त्रीभवनस्तोमकृतात्मबाललीलम् ।
भवतापहरं सतां नितान्तं पवमानालयनायकं भजेऽहम् ॥ ४० ॥

मैं पवनगृहपति की उपासना करता हूँ, जो विश्वनियन्ता,
व्रजगुणानुभोग के प्राङ्गण में बाल-सुलभ लीलाओं करने वाले
तथा सज्जनों के समस्त सांसारिक कष्टों के अपहर्ता हैं ।

मददृषितमानसानवेक्ष्यं मदनारेरपि मोदमाधधानम् ।
कटनापनुदं नृणां नभस्वत्सदनाधीशमुपाश्रयेऽनुवेलम् ॥ ४१ ॥

कामारि शिव को आह्लाहित करने वाले तथा मनुष्यों के पापों को दूर
करने वाले वायुगृहपति का मैं बारम्बार आश्रय लेता हूँ, जो
अलङ्कार से मलिन मन वाले व्यक्तियों के लिये अनवलोकनीय हैं ।

यदुकुलार्णवपूर्णनिशाकरं विदुरकीर्तितदिव्यगुणोत्तरम् ।
भृङ्गलपीतदुङ्गलमृभुद्विषां भिदुरमाशुगवेश्मपतिं भजे ॥ ४२ ॥

यदुर्वश-रूपी सागर के लिये पूर्णेन्दु, विद्वानों द्वारा स्तुत दिव्य
गुणों वाले, कोमल पीताम्बर धारण करने वाले, देवशत्रु
राक्षसों का विनाश करने वाले पवनालयेश को मैं आराधना
करता हूँ ।

राज्ज्वलयोचन उरे भगवन् नवाभ-
राज्ज्वसवर्ण गुरुवायुपुरेश शौरे ।
जेज्ज्यमानमडिभन्नभिलाभरारि-
जाज्ज्वनानल कृपालय पालयैनम् ॥ ४३ ॥

कमलनयन, नवीन मेघ के समान (श्याम) वर्ण वाले, सम्पूर्ण
दानवों की सेना-रूपी छन्धन के लिये अग्नि स्वरूप, प्रशस्त

मछिमा वाले, दया के आगार, छे भगवान् गुरुवायुपुरेश ! मेरी
रक्षा कीजिअे ।

लीलाविशेषविषयीकृतगोपवाटं
नीलारविन्दनिभनिर्मलनीलभासम् ।
वेलातिरिक्तकरुणार्णवमाश्रयेऽहं
नीलालकाञ्चितमुषं मरुदालयेशम् ॥ ४४ ॥

गोपों के अछातों को अपनी क्रीडा का विषय बनाने वाले तथा
नील-कमल के समान निर्मल, श्याम कान्ति वाले पवनालयेश
का मैं आश्रय लेता हूँ, जो असीम करुणा के सागर हैं तथा
जिनका मुष्, काले घुङ्घराले बालों से शोभायमान है ।

विनताश्रितपालनैकदीनं विनतानन्दनवाहनं रमेशम् ।
जनतापनुदं जनार्दनं तं मनसाऽहं कलये मरुत्पदेशम् ॥ ४५ ॥

मैं जनार्दन (वायुपुरेश) का मन से चिन्तन करता हूँ,
जो विनत शरणागतों की रक्षा करने में तत्पर रहते हैं,
विनतापुत्र गरुड जिनका वाहन है, जो रमापति हैं तथा
मानवमात्र के दुःख दूर करते हैं ।

शकटासुरनाशनं जनानां प्रकटानन्दमाशुगालयेशम् ।
निकटागतलोकपारिजातं विकटाधृष्यमजस्रमाश्रयेऽहम् ॥ ४६ ॥

शकट नामक दैत्य का वध करने वाले, अपने (भक्त) जनों
को आनन्द प्रदान करने वाले, शरणागतों के (छिछानुत्प हुल
देने वाला) पारिजातक वृक्ष तथा दुष्ट मनुष्यों के लिअे अगम्य
छे वातालयेश ! मैं अपना निरन्तर प्राश्रय लेता हूँ ।

षडङ्घ्रिमात्माङ्गरुथाऽतिवेलं विऽम्भयन्तं पवनालयेशम् ।
अऽम्भरावाप्यमजस्रमीडे तृंशलीनैर्मुनिभिर्निरीक्ष्यम् ॥ ४७ ॥

भ्रमरोपम कान्ति वाले वातालयेश की मैं निरन्तर स्तुति करता
हूँ, जो अलङ्कार-रहित मानव को ही प्राप्य हैं तथा निरीड
(छिछारहित) मुनिजन छे जिनका दर्शन करने में सक्षम हैं ।

सततं भवदीयपादसेवावितताशं विविधार्तिपीडितं माम् ।
वितनुष्य निकाममासकामं श्रितरक्षापर वातगेलवासिन् ॥ ४८ ॥

अपने आश्रित जनों की रक्षा में तत्पर डे गुरुवायुपुरेश, मैं
नाना प्रकार के दुःखों से आक्रान्त आप पादाम्बुजों की निरन्तर सेवा
का अत्यधिक आकाङ्क्षी हूँ । आप मेरी समस्त कामनाओं को पूर्ण
कीजिये ॥

उत्तदितिस्तुतज्जल भक्तलोकावृत पवमानपुरेश विश्वमूर्ते ।
अतनुतनुरुथा जितोद्यदक्युत परिपालय मां दयापयोधे ॥ ४८ ॥

डे असुर-समूह को नष्ट करने वाले, निज भक्तों से आवृत,
विश्वमूर्ति, शरीर की प्रभूत कान्ति से सज्जों उदीयमान सूर्यो
को उत्तम करने वाले, दयासिन्धु पवनालयेश ! मेरी रक्षा
कीजिये ।

७मध्याकराजल्लाटं स्वगानकमप्रीणितशेषगोपीकदम्बम् ।
नमस्वार्द्धमीशादिकानां भजेऽहं समस्तेष्टं वातगोडाधिवासम् ॥ ५० ॥


मैं श्रीगुरुवायुपुरेश की उपासना करता हूँ, जिनका मस्तक
धुङ्घराले बालों से सुशोभित है, जो अपने मधुर गान से
समस्त गोपियों को मुग्ध करते हैं, जो शिव आदि देवों के भी
वन्दनीय हैं तथा (निज भक्तों को) समस्त अभिलषित पदार्थ
प्रदान करते हैं ।

क्षन्तव्यो मेऽपराधः पवनपुरपते स्तोत्रनिर्मातुरेवं
मन्तव्योऽहं विमूढः शिशुरिति भवता भक्तवात्सल्यराशे ।
अन्तर्भक्त्याद्य वर्णकमरचितमिमं स्तोत्ररूपं प्रबन्धं
स्वान्तप्रीत्या गृहाण प्रविद्धितजगदामोद दामोदर त्वम् ॥ ५१ ॥


डे पवनपुरपते ! स्तोत्रनिर्माण के मेरे इस अपराध को क्षमा
कीजिये । भक्त पर अपार स्नेह करने वाले, अप मुझे मूर्ख
बालक के समान समझे । संसार को आनन्द प्रदान करने वाले
डे दामोदर ! अब आप हार्दिक भक्ति द्वारा वर्णकमानुसार रचित
इस स्तोत्ररूप प्रबन्ध को स्वान्तप्रीति से स्वीकार कीजिये ।

इति द्वितीयो भागः ।

Encoded and proofread by PSA Easwaran

——
guruVAyupureshastotrAkSharamAlA

pdf was typeset on June 29, 2023

——
Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

